



बढ़ते कदम

वर्ष-15
अंक-09
2016

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी

विश्व शांति का प्रतीक
सांची स्तूप

भारत के संविधान में राजभाषा

12. उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय की भाषा

राजभाषा आयोग ने सिफारिश की थी कि जहां तक उच्चतम न्यायालय की भाषा का सवाल है उसकी भाषा इस परिवर्तन का समय आने पर अन्ततः हिन्दी होनी चाहिए। समिति ने यह सिफारिश मान ली है।

आयोग ने उच्च न्यायालयों की भाषा के विषय में प्रादेशिक भाषाओं और हिन्दी के पक्ष-विपक्ष में विचार किया और सिफारिश की कि जब भी इस परिवर्तन का समय आए, उच्च न्यायालयों के निर्णयों, आज्ञासियों और आदेशों की भाषा जब प्रदेशों में हिन्दी होनी चाहिए किन्तु समिति की राय है कि राष्ट्रपति की पूर्व सम्मति से आवश्यक विधेयक पेश करके यह व्यवस्था करने की गुंजाइश रहे कि उच्च न्यायालयों के निर्णयों, आज्ञासियों (डिक्रियों) और आदेशों के लिए उच्च न्यायालय में हिन्दी और राज्यों की राजभाषाएं विकल्पतः प्रयोग में लाई जा सकेंगी।

समिति की राय है कि उच्चतम न्यायालय अन्ततः अपना सब काम हिन्दी में करे, यह सिद्धान्त रूप में स्वीकार्य है और इसके संबंध में समुचित कार्यवाही उसी समय अपेक्षित होगी जब कि इस परिवर्तन के लिए समय आ जाएगा। जैसा कि आयोग की सिफारिश की तरमीम करते हुए समिति ने सुझाव दिया है, उच्च न्यायालयों की भाषा के विषय में यह व्यवस्था करने के लिए आवश्यक विधेयक विधि मंत्रालय उचित समय पर राष्ट्रपति की पूर्व सम्मति से पेश करे कि निर्णयों, डिक्रियों और आदेशों के प्रयोजनों के लिए हिन्दी और राज्यों की राजभाषाओं का प्रयोग विकल्पतः किया जा सकेगा।

13. विधि क्षेत्र में हिन्दी में काम करने के लिए आवश्यक आरम्भिक कदम-

मानक विधि शब्दकोश तैयार करने, केन्द्र तथा राज्य के विधान निर्माण से संबंधित सांविधिक ग्रन्थ का अधिनियम करने, विधि शब्दावली तैयार करने की योजना बनाने और जिस संक्रमण काल में सांविधिक ग्रंथ और साथ ही निर्णयविधि अंशतः हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे, उस अवधि में प्रारम्भिक कदम उठाने के बारे में आयोग ने जो सिफारिश की थी उन्हें समिति ने मान लिया है। साथ ही समिति ने यह सुझाव भी दिया है कि संविधियों के अनुवाद और विधि शब्दावली तथा कोशों से संबंधित सम्पूर्ण कार्यक्रम की समुचित योजना बनाने और उसे कार्यान्वित करने के लिए भारत की विभिन्न राष्ट्रभाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले विशेषज्ञों का एक स्थाई आयोग या इस प्रकार कोई उच्च स्तरीय निकाय बनाया जाए। समिति ने यह राय भी जाहिर की है कि राज्य सरकारों को परामर्श दिया जाए कि वे भी केन्द्रीय सरकार से राय लेकर इस संबंध में आवश्यक कार्रवाई करें। समिति के सुझाव को दृष्टि में रखकर विधि मंत्रालय यथासंभव सब भारतीय भाषाओं में प्रयोग के लिए सर्वमान्य विधि शब्दावली की तैयारी और संविधियों के हिन्दी में अनुवाद संबंधी पूरे काम के लिए समुचित योजना बनाने और पूरा करने के लिए विधि विशेषज्ञों के एक स्थाई आयोग का निर्माण करे।

14. हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए योजना का कार्यक्रम--

समिति ने यह सुझाव दिया है कि संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की योजना संघ सरकार बनाए और कार्यान्वित करे। संघ के राजकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी के प्रयोग पर इस समय कोई रोक न लगाई जाए। तदुसार गृह मंत्रालय एक योजना कार्यक्रम तैयार करे और उसे अमल में लाने के संबंध में आवश्यक कार्रवाई करे। इस योजना का उद्देश्य होगा संघीय प्रशासन में बिना कठिनाई के हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए प्रारम्भिक कदम उठाना और संविधान के अनुच्छेद 343 खंड (2) में किए गए उपबन्ध के अनुसार संघ के विभिन्न कार्यों में अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना, अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी का प्रयोग कहां तक किया जा सकता है यह बात इन प्रारम्भिक कार्रवाईयों की सफलता पर बहुत कुछ निर्भर करेगी। इस बीच प्राप्त अनुभव के आधार पर अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी के वास्तविक प्रयोग की योजना पर समय-समय पर पुनर्विचार और उसमें हेर-फेर करना होगा। क्रमशः

विषय वस्तु

प्रसंगवश—

—सुधांशु कुमार विश्वास — 3

रेल समाचार —

—संदीप कुमार पाण्डेय 4

अपमान —

—मेघा कुमारी 5

राजभाषा संबंधी पुरस्कार—

—भारत भूषण पाण्डेय 9

स्वच्छता—

—इंद्र ज्योति राय 12

... खोलिए गुगल—

—विनोद कुमार त्रिपाठी 14

उपनयन संस्कार —

—सुप्रिया 16

तुलसी विवाह

—पूजा कुमारी 17

स्वास्थ्य व्यवस्था

—प्रकाश रंजन 18

चित्र वीथिका

19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय

पूर्व रेलवे/मालदा

फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email – Rajbhasha.malda@gmail.com

Web: www.er.indianrailway.gov.in

सांची स्तूप

बेतवा नदी के तट स्थित सांची मध्य प्रदेश राज्य के रायसेन जिले, में एक छोटा सा गांव है। यहां कई बौद्ध स्मारक हैं, जो तीसरी शताब्दी ई.पू. से बारहवीं शताब्दी के बीच के काल में निर्मित हुए हैं। यह भोपाल से लगभग 50 किमी तथा विदिशा से 10 कि॰मी॰ की दूरी पर मध्य-प्रदेश के मध्य भाग में स्थित है। यहाँ छोटे-बड़े अनेक स्तूप हैं पर इनमें स्तूप संख्या 2 सबसे बड़ा है। चारों ओर की अदभुत हरियाली मन को मोहे बिना नहीं रहती। इस स्तूप को घेरे हुए कई तोरण भी बने हैं। उन्ही के समीप प्रेम, शांति, विश्वास और साहस के प्रतीक एक गुप्त कालीन पाषाण स्तंभ भी है। सांची का महान मुख्य स्तूप, मूलतः सम्राट अशोक महान ने तीसरी शती, ई.पू. में बनवाया था। इसके केन्द्र में एक अर्धगोलाकार ईंट से निर्मित ढांचा था, जिसमें भगवान बुद्ध के कुछ अवशेष रखे गए थे। इसके शिखर एक छत्र भी सुशोभित था।

ऐसा माना जाता है कि वस्तुतः इस के निर्माण में शुंग वंश एवं सातवाहन वंश का योगदान रहा है। अनुमान के आधार पर शुंग वंश के अग्नि मित्र ने इसके मूल स्वरूप का लगभग दुगुना विस्तार कराया था और तीन छतरियां भी लगाई थीं। सांची और उसके आसपास के अन्य स्तूपों को संवारने के लिए स्थानीय लोगों द्वारा भी प्रयत्न किया गया था जिससे लोग भौतिक जीवन के साथ साथ आध्यात्मिक उन्नति भी प्राप्त कर सकें। वैसे तो सांची में तमाम तरह की संस्कृतियों का मिश्रण एवं उस पर उकेरे गए चित्र या अलंकरण परिभाषित करते हैं लेकिन मूल रूप से सांची बुद्ध से ही संबंधित है और बुद्ध के धर्म चक्र को बड़ी कारीगरी के साथ यहाँ दर्शाया गया है।

जैसे जैसे समय बीतता गया वैसे वैसे सांची के स्तूप में बहुत सारे परिवर्तन हुए। यहां तक कि हिंदू धर्म के अनुसार भी कुछ निर्माण कराए गए लेकिन बौद्ध धर्म के पतन के साथ ही सांची का स्तूप उपेक्षित हो गया और अंततः खंडित अवस्था में अवशिष्ट रह गया। वैसे तो कुछ लोगों मानना है कि सांची को कई बार किसी बड़े खजाने के लिए तोड़ा गया।

सांची तक पहुंचने के लिए रेल मार्ग, सड़क मार्ग और वायु मार्ग तीनों के द्वारा जाया जा सकता है। सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन स्वयं सांची ही है पर विदिशा भी यहां से दूर नहीं है और वहां पर प्रायः सभी गाड़ियां रुकती हैं। वायु मार्ग से भोपाल में उतर कर यहां आया जा सकता है। — सुधांशु कुमार विश्वास

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक

मोहित सिन्हा
मंडल रेल प्रबंधक

परामर्श

विजय कुमार साहू
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक

प्रधान संपादक

सुधांशु कुमार विश्वास
राजभाषा अधिकारी(प्रा.)

संपादक

सच्चिदानंद
व. अनुवादक

कार्यकारी संपादक

इंद्र ज्योति राय
क. अनुवादक

सहयोग

दयामय दास
कनिष्ठ इंजीनियर

रेल समाचार

वरिष्ठ नागरिकों के लिए आरक्षण कोटे में वृद्धि

रेलवे ने आरक्षण हेतु वरिष्ठ नागरिकों के कोटे में बढ़ोतरी कर दी है। वरिष्ठ नागरिकों के आरक्षण कोटे में बढ़ोतरी करते हुए उसे 50 फीसदी तक बढ़ा दिया है। इस नए नियम के मुताबिक अब ट्रेन में यात्रा के दौरान वरिष्ठ नागरिकों को करीब 90 सीटें आरक्षित मिलेंगी। रेलवे बोर्ड की ओर से इस आरक्षण को लेकर घोषणा कर दी गई है। बजट में घोषणा की गई थी कि ट्रेनों में बुजुर्गों के लिए आरक्षित सीटों की संख्या बढ़ाई जाएगी। ऐसे में अब ट्रेनों में बुजुर्गों के लिए 80 से 90 बर्थ उपलब्ध होंगे। रेलवे ने बदले टिकट बुकिंग के नियम, जानें क्या है नया नियम केवल वरिष्ठ नागरिक ही नहीं गर्भवती महिलाओं की परेशानियों को ध्यान में रखकर प्रत्येक शयनयान श्रेणी के डिब्बे में कोटा बढ़ाकर 6 लोअर बर्थ और वातानुकूलित 2 टीयर, 3 टीयर में इसे बढ़ाकर 3 बर्थ कर दिया गया है। रेलवे के ऐलान के बाद अब वरिष्ठ नागरिकों के साथ-साथ 45 साल से ज्यादा उम्र की महिलाएं और गर्भवती महिलाएं भी इस सुविधा का लाभ उठा सकेंगी।

रेलवे में सफाई की सुविधा हेतु व्यवस्थाएं

भारतीय रेल के सफाई अभियान 'स्वच्छ रेल, स्वच्छ भारत' को आगे बढ़ाने के क्रम में रेल ने 'क्लीन माई कोच' सेवा की शुरुआत की है। योजना के अनुरूप कोच में सफाई के लिए यात्री मोबाइल नम्बर 588888 पर एसएमएस कर सकते हैं। इसके अलावा यात्री एंडराइड अप्लीकेशन '**Cleanmycoach Indian Railways**' का इस्तेमाल कर सकते हैं या वेब पेज '**cleanmycoach.com**' पर लॉग- इन करके आग्रह कर सकते हैं। यात्रियों के आग्रह की पावती के रूप में एक कोड के साथ उनके मोबाइल फोन पर एसएमएस जाएगा। इसके साथ ही एक संदेश सर्वर के जरिये उक्त रेल गाड़ी में चलने वाले हाउस कीपिंग स्टॉफ के मोबाइल पर भी भेजा जाएगा। इसमें यात्रियों का कोच नम्बर और बर्थ नम्बर दिया जाएगा। हाउस कीपिंग स्टॉफ यात्रियों से संपर्क करेगा और सफाई के संबंध में यात्रियों की मांग पूरी करेगा। संतुष्ट हो जाने पर यात्री हाउस कीपिंग स्टॉफ को उक्त कोड नम्बर बताएगा। इसे एसएमएस के जरिये वापस भेजा जाएगा। इससे स्पष्ट हो जाएगा कि शिकायत दूर कर दी गई है। यदि यात्री संतुष्ट नहीं है तो वह कोड नहीं बताएगा और शिकायत को दूर किया हुआ नहीं माना जाएगा। यह योजना भारतीय रेल के 43 डिविजनों में शुरू की जा रही है। इस पहल की औपचारिक शुरुआत के साथ इसे पूरे देश में लागू किया जाएगा। मौजूदा वित्त वर्ष के दौरान अन्य 24 डिविजनों से चलने वाली गाड़ियों में भी इसे लागू किया जाएगा।

अकेली महिला को सीट बदलने की सुविधा

अगर कोई अकेली महिला लंबी दूरी की ट्रेन में सफर कर रही हैं और सीट बदलने की इच्छा रखती है तो अब रेलवे उसकी मदद करेगा। इसके लिए रेलवे द्वारा नियुक्त एक वरिष्ठ महिला रेल अधिकारी मदद करेगी। इसके लिए बस एक नंबर पर फोन करना होगा। सफर के दौरान कई बार अकेली महिलाओं को पुरुष यात्रियों के बीच सीट मिल जाती है। ऐसे में वो असहज महसूस करती हैं और अपनी सीट बदलना चाहती है। ऐसी स्थिति में रेलवे के अधिकारी उनकी मदद करेंगे। नया रूल महिलाएं 9003160980 नंबर पर रेलवे के अधिकारियों से संपर्क कर सकती हैं। उन्हें अपना नाम और फोन नंबर बताना होगा। उन्हें अपनी समस्या बतानी होगी। परंतु शिकायत असली होनी चाहिए। 182 फोन कर आप मदद मांग सकती हैं।

— संदीप कुमार पाण्डेय

अपमान

बचपन से ही माधव के मन में धर्म-कर्म के प्रति गहरी आस्था थी। वह दूसरों को अपने पास की वस्तु दे देने में कभी संकोच नहीं करता था। गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण जब माधव स्कूल पढ़ने जाता था तो उसके पास पैसे बड़ी मुश्किल से आते थे फिर भी वह किसी के मांगने पर बिना किसी झिझक के उसे दे दिया करता था।

स्कूल से नौकरी पाने तक भले ही उसने अपने को पैसों के लिए मुंहताज पाया हो पर किसी की जरूरत के समय उसके मांगने पर पूर्णतया इंकार नहीं कर सका था। उसकी यह आदत धीरे-धीरे और बढ़ती गई।

पढ़ाई में वह कुछ खास तेज तो नहीं था लेकिन मेहनती बहुत था। स्नातक होने के बाद उसने नौकरी पाने की कई जगह चेष्टा की। संयोग से उसे एक नौकरी मिल गई और उसके कुछ दिन बाद शादी भी हो गई।

शादी के कुछ बरसों के बाद से ही वह पत्नी और बेटे-बेटियों के साथ पटना आ गया। पटना में उसे रहते हुए कई बरस बीत गए।

माधव के साथ उसकी पत्नी बहुत अरसे से रह रही थी पर उससे उसके विचार कभी मिले नहीं। इसका कारण माधव की दृष्टि में प्रमिला का स्वार्थी होना था, जबकि प्रमिला उसे मूर्ख समझती थी। दोनों के अहम अपने-अपने स्वभावों के कारण अक्सर परिवार में शोरगुल का वातावरण तैयार कर देते थे। माधव फिर भी शांत ही रहना चाहता था।

माधव ने पत्नी को अपने ही तरह बनाने का बहुत प्रयास किया पर पत्नी भी तो कम नहीं थी। वह कभी-कभी अपनी उग्रता दिखा ही देती। इसी तरह किसी छोटे से मुद्दे पर एक दिन दोनों में तनाव हो गया।

माधव को ऑफिस जाना था पर उसकी जेब में संयोग से एक पाई भी नहीं थी। ऑफिस जाने से पहले ही चूंकि दोनों में झगड़ा हो गया था। इसलिए माधव बिना खाना खाए ऑफिस जाने के लिए तैयार हो गया। घर से निकलते वक्त माधव ने पत्नी से कहा-“प्रमिला, कुछ पैसे दे दो।”

पर गुस्से में उफनती प्रमिला ने टका से जवाब दिया-“कौन सा बैंक बैलेंस कर छोड़ा है, जो मेरे पास रुपये हैं ?”

“देखो न कम से कम दस रुपए भी दे दो।” माधव ने समझौता करने के अंदाज में कहा।

पर प्रमिला ने उसे ऐसी खरी-खोटी सुनाई कि वह और वहां टिक नहीं सका। बस सीधा घर से चल पड़ा। रास्ते में माधव को चिंता होने लगी कि जेब में एक फूटी पाई भी नहीं है, बस का किराया कैसे चुकाएगा? पर माधव की सोच चूंकि ईश्वरवादी थी सो उसने मान लिया कि ईश्वर तो है ही! वही कोई व्यवस्था भी करेगा।

माधव स्वभाव से ही सज्जन एवं शांत था। इसलिए उसे कोई खास परेशानी नहीं हुआ करती थी। फिर भी वह आज यह सोचने के लिए बाध्य हो गया था कि जिस पत्नी और बेटे बेटियों के लिए वह कमाता है, वही दस रुपये के लिए भी कभी उसे दुत्कार सकते हैं। निश्चित ही वह यह सोच-सोच कर काफी देर तक अशांत रह सकता था। पर उसका मन बहुत देर तक अशांत नहीं रह सका, क्योंकि उसे किसी महात्मा की कही बातें याद आने लगी थीं कि इस संसार के सभी नाते-रिश्ते उस पर कर्ज हैं और उन्हें उतारना ही मनुष्य का फर्ज है।

इस विचार के मन में आते ही उसे काफी राहत मिली। तभी पीछे से उसके एक दोस्त ने कंधे पर हाथ रखते हुए कहा-“ऑफिस चलना है?”

“हां भाई!”

“फिर चलो, बस तो आ रही है।”

दोनों बस में चढ़ गए। उसके दोस्त ने ही उसका भी टिकट कटा दिया। अपने दोस्त के प्रति माधव का हृदय कृतज्ञता से भर उठा पर सामने वह उसे प्रकट न करते हुए एक क्षीण मुस्कान लिए हुए बस से उतर गया।

ऑफिस में बिना खाए जो पहुंचा था इसलिए चेहरे पर उसके भाव कभी-कभी प्रकट हो जाया करते थे। फिर भी उसने इसकी कोई चर्चा अपने सहकर्मियों से करना उचित नहीं समझा। पर भूख तो भूख ही है, वह सभी प्राणियों पर बिना भेदभाव के अपना प्रभाव दिखाती है। उस पर भी वह हावी होने लगी।

दोपहर होते-होते उसे भी काफी भूख सताने लगी पर उसके भीतर का अहम कड़ा हो गया था इसलिए उसने निर्णय कर लिया था कि वह किसी से भी पैसे उधार नहीं मांगेगा। ईश्वर है तो वह उसके खाने की व्यवस्था भी करेगा।

ऑफिस के सहकर्मियों ने लंच के समय पूछा भी था कि तुम लंच नहीं करोगे तो उसने कह दिया-थोड़ी देर बाद कर लेंगे। पर सत्य तो यह था कि उसके पास पैसे ही नहीं थे कि वह पिउन भेज कर खाने के लिए कुछ मंगा सके।

दो बजे के करीब उसका एक सहकर्मी उसकी सीट के पास आया और उससे बाहर चलने का आग्रह किया। माधव ने भी उससे कुछ पूछना नहीं चाहा, बस पीछे-पीछे चल दिया। उसका वह सहकर्मी उसे लेकर मिठाइयों की दुकान पर जा पहुंचा।

माधव को वहां ले जाकर उसने उससे कहा कि आज वह बहुत खुश है। इसलिए उसे आज मिठाइयां खिलाना चाहता है। माधव को उसने भरपेट मिठाई खिलाई और स्वयं भी खाई। माधव का पेट भर जाने पर भी उसने जबरदस्ती कुछ और मिठाइयां खाने के लिए दबाव दे रहा था। माधव की क्षुधा शांत हो चुकी थी। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और अपने ऑफिस में वापस आ गया।

उस घटना ने उसे घोर आस्तिक बना दिया। वह दूसरों को कुछ भी देने में निःसकोच हो गया। अब उसे यह विश्वास हो गया था कि अपने और गैरों में कोई खास फर्क नहीं है।

नतीजा यह हुआ कि धीरे-धीरे उसके हृदय में अपनों के लिए आसक्ति कम उत्तरदायित्व बोध ही रह गया। इस परिवर्तन से प्रमिला को कष्ट तो बहुत होता था पर वह जब अपना ही स्वभाव नहीं बदल सकती थी तो पति के स्वभाव को क्या बदल पाती?

ले-देकर जीवन की गाड़ी चल ही रही थी। जब तक माधव नौकरी में थे उन्हें कुछ परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ा। पर एक दिन माधव बाबू भी अपने सरकारी कार्य से रिटायर हो गए। एक मात्र बेटा सुरेश इंजीनियर बन गया था। घर में बहू और उसके बेटियों-बेटों से रौनक ही रौनक थी।

रिटायर आदमी को काम तो कुछ होता नहीं है पर समूचे घर को अपने अधिकारों के तले बांधकर रखना चाहता है। माधव की दानशीलता गई नहीं थी। उसने अपने नौकरी के समय में किसी भिखारी को खाली हाथ नहीं लौटाया था। पर अब वैसी बात नहीं थी।

एक दिन माधव के पास एक अपरिचित व्यक्ति आया और बोला-“सुना है, आप बहुत दयालु हैं। मैं आज बहुत बड़ी मुसीबत में फंस गया हूं। बड़ी आशा से आपके पास आया हूं। मेरी बेटी की आज शादी है। पांच हजार

रुपयों की सख्त आवश्यकता है। यदि ये रुपये हमने नहीं दिए तो लड़के वाले बारात लौटा ले जाएंगे। आप मेरी इज्जत रख लीजिए...।”

माधव को उस पर दया आ गई। वह पत्नी से बोला—“प्रमिला, दरवाजे पर एक दुखी सज्जन खड़े हैं जो अपनी बेटी की शादी में घट गए पांच हजार रुपयों के लिए पैर पकड़ रहे हैं। तुम दे देती तो ठीक रहता।”

प्रमिला का पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया। वह भीतर से बाहर आकर बड़बड़ाती हुई उस अजनबी को कोसनी लगी। बेचारे माधव बाबू को बोलने का अवसर नहीं था।

मां की बड़बड़ाहट सुन कर बहू के साथ सुरेश भी घर से निकल कर आ गया। उसने भी मां के सुर में सुर मिला कर माधव की वह फजीहत किया कि माधव को कुछ कहने का मौका ही नहीं मिल सका था। घर में माधव बाबू की फजीहत देख कर वह अजनबी डरकर भाग जाने के लिए खड़ा हुआ। माधव ने उसे हाथ के इशारे से रोका और उसके साथ ही बाहर निकल गया।

इस घटना ने माधव को कहीं से तोड़ कर रख दिया। उसने सबके शांत होने पर उस अजनबी का पता पूछकर उसके घर जाने का निर्णय कर लिया। लेकिन खाली हाथ जा कर भी क्या होगा और घर वाले उसे पैसे देंगे नहीं।

माधव वहां से लौट कर घर आ गया पर उसके दिल में यह बात बैठ गई कि आदेश देने के लिए आदमी को काम से रिटायर होने की जरूरत नहीं है। रिश्ते मात्र स्वार्थ की धरातल पर खड़े कंटीले पौधे हैं जिनको लाख खाद पानी देने के बाद भी सटने से कहीं न कहीं चुभ जाया करते हैं। उस दिन के बाद से माधव ने निर्णय किया कि उसे भी कोई काम करना चाहिए। बिना काम किए वह किसी रिश्ते के भरोसे अपने मन का कोई काम नहीं कर सकता। उसके लिए उसे बेटा और पत्नी का मुंह ताकना पड़ेगा।

फिर भी उसके कदम अपने आप घर से बाहर निकल पड़े। रास्ते में उसने अपने एक आध दोस्तों से पांच हजार रुपये देने के लिए पूछा पर कहीं काम नहीं बना। निराश होकर उसने अपने हाथ में पहनी हुई सोने की कीमती अंगूठी को बेचने का निर्णय कर लिया।

जौहरी की दूकान पर अपनी एकमात्र 15 हजार की अंगूठी को 10 हजार में बेचकर भी उसे उतना दुख नहीं हुआ जितना अजनबी के सामने उसे जिल्लत उठाने से हुआ था।

अजनबी के यहां बारात दरवाजे पर आ लगी थी। दूल्हे का बाप बार-बार कह रहा था कि जब तक पांच हजार रुपये नहीं मिलेंगे द्वारपूजा नहीं होगी। वह अजनबी व्यक्ति समधी के पैर पड़ रहा था, पर वह बार-बार बारात लौटा ले जाने की धमकी देता था।

माधव से अब न रहा गया और उसने अपनी गांठ से पांच हजार रुपये निकालकर उस अजनबी को थमाते हुए कहा—“लो ये रुपये, मारो इसके मुँह पर ताकि यह फिर बारात लौटाने की बात नहीं कहे।”

माधव वहां से लौट कर घर आ गया पर उसके दिल में यह बात बैठ गई कि आदेश देने के लिए आदमी को काम से रिटायर होने की जरूरत नहीं है। रिश्ते मात्र स्वार्थ की धरातल पर खड़े कंटीले पौधे हैं जिनको लाख खाद पानी देने के बाद भी सटने से कहीं न कहीं चुभ जाया करते हैं। उस दिन के बाद से माधव ने निर्णय किया कि उसे

भी कोई काम करना चाहिए। बिना काम किए वह किसी रिश्ते के भरोसे अपने मन का कोई काम नहीं कर सकता। उसके लिए उसे बेटा और पत्नी का मुंह ताकना पड़ेगा।

दुखी मन से माधव ने इस बुढ़ापे में रोजगार तलाशना शुरू किया पर बूढ़े माधव को कोई काम देना नहीं चाहता था। इसलिए व्यापार करने की बात सोच लिया। उसने अपनी कीमती अंगूठी को बेचने से मिले दस हजार रुपयों में से बचे पांच हजार रुपयों से कोई व्यापार करना शुरू करने का विचार संजो लिया।

माधव का व्यापार चल निकला। हालांकि इसके लिए उसने दिन रात वह मेहनत की कि सुरेश और प्रमिला ने उसे पागल तक कह दिया। साल भर होते-होते माधव के पास गाड़ी, बंगला और नौकर चाकर सब हो गया।

वह अपना व्यापार दूसरों शहरों में बढ़ाने के लिए चला गया। वहां उसने भौतिक दुनिया की सारी चीजें इकट्ठी कीं। इन बातों की खबर उसके बेटे और पत्नी को थी। पर वे वहां जाने के लिए साहस नहीं कर पाते थे।

इधर मां के सिखाए रास्ते पर चलते सुरेश को भ्रष्टाचार के आरोप में नौकरी से निकाल दिया गया। बीबी की फरमाइशों और बेटे-बेटियों की सुख-सुविधा के लिए उसने जी खोल कर पैसा कमाया था। लेकिन पैसे ईमानदारी से नहीं कमाए गए थे इसलिए उनका खामियाजा तो किसी न किसी दिन भुगतना ही था।

कल तक जो बच्चे और बीबी उसे सर पर बिठाए रखते थे, नौकरी छूटते ही हालात बदल गए। वही अब बात-बात पर ताने कसा करते थे।

धीरे-धीरे उस परिवार की स्थिति इतनी बदतर हो गई कि शाम को चूल्हा जलाने के लिए भी घर में अनाज नहीं था। सभी निराश बैठे थे। तभी वह अजनबी पांच हजार रुपए लेकर वहां आया। प्रमिला के हाथों में देते हुए कहा-“आपने भले ही सामने में हमें गालियां दी थीं पर पीछे से रुपये भिजवाकर मेरी लाज रख ली थीं। आप देवी हैं। आपके रुपये मैंने लौटाने में देर कर दी है, इसके लिए क्षमा चाहता हूं। एक बार माधव बाबू से मिल लेता तो शांति मिल जाती।”

प्रमिला बुक्का फाड़ कर रोना चाहती थी पर वह भी नहीं कर सकती थी। उसके भीतर का दर्द बांध तोड़ कर बाहर आना ही चाहता था पर वह भी संभव नहीं था। तुरंत उसके मन में यह भय समा गया कि यदि कहीं उसने रोया तो यह अजनबी बिना पैसे दिए ही चला जाएगा, फिर आज भी खाना नहीं बनेगा।

पांच हजार रुपये बहुत थे। कुछ दिनों तक उस परिवार का काम चल सकता था। प्रमिला ने उन रुपयों को डरते-डरते रख लिया। लेकिन उसकी समझ में यह बात आ गई थी कि किसी बेबस की सहायता करना आदमी का धर्म है। इस भावना के समर्थक अपने पति का अपमान करना ठीक नहीं था।

माधव के विचारों को गलत मानने और उसका अपमान करने कारण वे उसके पास पहले कभी जाना उचित नहीं समझे थे, इसलिए इस दुर्दिन में भी जाने के लिए साहस नहीं जुटा पा रहे थे। लेकिन आदमी जब सत्य समझ जाता है तो उसे अपने किए पर काफी पछतावा होता है। प्रमिला को भी अपने किए पर गहरा दुख था। वह अपनी गलतियों को मिटा तो नहीं सकती थी, हां! उसके लिए क्षमा जरूर मांग सकती थी।

आज वह विवश थी। जिस सत्य को वह जीवन भर नहीं समझ सकी, उसी सत्य को समय ने पल भर में समझा दिया था। उसने माधव को भले ही गालियां बकी थीं लेकिन आज उसी के सतविचारों ने उसके घर का चुल्हा जलवाया था। उसने निर्णय किया कि कल ही माधव के पास जाएगी तथा अपनी गलतियों के लिए हृदय से क्षमा मांग लेगी।

— मेधा कुमारी

राजभाषा संबंधी पुरस्कार

प्रवीण एवं प्राज्ञ हेतु पुरस्कार

हिंदी शिक्षण योजना की परीक्षाएं उत्तीर्ण करने पर 12 ने की वेतन वृद्धि के बराबर वयैक्तिक वेतन दिया जाता है। किसी कार्मिक द्वारा परीक्षा में 55 से 59 प्रतिशत तक अंक प्राप्त करने पर तृतीय पुरस्कार तथा 60 से 69 प्रतिशत तक अंक प्राप्त करने पर द्वितीय पुरस्कार एवं 70 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने पर प्रथम पुरस्कार दिया जाता है जिसकी राशि निम्न प्रकार है:-

	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
प्रवीण —	रु. 1800	रु. 1200/-	रु. 600/-
प्राज्ञ -	रु. 2400/-	रु. 1600/-	रु. 800/-

प्राइवेट रूप से परीक्षा पास करने पर उपर्युक्त के साथ-साथ एकमुश्त पुरस्कार भी दिया जाता है जो प्रवीण के लिए - रु. 1 -/500 तथा प्राज्ञ के लिए 2400/- है।

हिंदी टंकण/हिंदी आशुलिपि परीक्षा पास करने पर

हिंदी टंकण:

- प्रथम पुरस्कार - रु. 2400/- (97% अंक प्राप्त करने पर)
- द्वितीय पुरस्कार - रु. 1600/- (95% अंक प्राप्त करने पर)
- तृतीय पुरस्कार - रु. 800/- (90% अंक प्राप्त करने पर)

हिंदी आशुलिपि:

- प्रथम पुरस्कार - रु. 2400/- (95% अंक प्राप्त करने पर)
- द्वितीय पुरस्कार - रु. 1600/- (92% अंक प्राप्त करने पर)
- तृतीय पुरस्कार - रु. 800/- (88% अंक प्राप्त करने पर)

प्राइवेट रूप से हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि परीक्षा पास करने पर उपर्युक्त के साथ-साथ एकमुश्त पुरस्कार भी दिया जाता है जो हिंदी टंकण के लिए 1600/- एवं हिंदी आशुलिपि के लिए 3000/- रुपये है।

इसके साथ-साथ हिंदी टंकण/हिंदी आशुलिपि परीक्षा पास करने पर 12 माह के लिए एक वयैक्तिक वेतन भी दिया जाता है। हिंदीतर भाषी आशुलिपि को 2 वयैक्तिक वेतन दिए जाते हैं।

टाइपिस्टों/आशुलिपिकों को पुरस्कार भत्ता योजना:

इस योजना के अंतर्गत हिंदी टंकण प्रशिक्षण प्राप्त तथा हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण प्राप्त टंकक या आशुलिपिक यदि हिंदी में औसतन 5 पत्र/टिप्पणियां प्रतिदिन अथवा 300 पत्र/प्ररूप/टिप्पणियां प्रति तिमाही टंकित करते हैं तो टंकक को 160/- रुपये तथा आशुलिपिकों को 240/- रुपये विशेष भत्ता दिया जाता है।

हिंदी प्रशिक्षण के अतिरिक्त सरकारी काम-काज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रेल मंत्रालय, रेलवे बोर्ड द्वारा विभिन्न प्रोत्साहन/पुरस्कार योजनाएं लागू की गई हैं, जिनका विवरण निम्न प्रकार है:-

1. कमलापति त्रिपाठी राजभाषा स्वर्ण पदक — हिंदी के प्रयोग-प्रसार में प्रशसनीय योगदान के लिए रेलों/उत्पादन कारखानों के वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड से ऊपर के अधिकारियों के लिए 1 पुरस्कार दिया जाता है।

2. रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक — हिंदी के प्रयोग-प्रसार में प्रशसनीय योगदान के लिए रेलों/उत्पादन कारखानों के वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड के अधिकारियों के लिए 30 पुरस्कार दिये जाते हैं।

3. रेल मंत्री राजभाषा शील्ड/ट्राफी तथा अन्य वैजयंतियां -

- | | | |
|-----|--|--|
| 3.1 | ‘क’ एवं ‘ख’ क्षेत्र में स्थित रेलों के लिए — | प्रथम पुरस्कार- रेल मंत्री राजभाषा शील्ड
द्वितीय पुरस्कार रेल-मंत्री राजभाषा ट्राफी |
| 3.2 | ‘ग’ क्षेत्र में स्थित रेलों के लिए — | प्रथम पुरस्कार- रेल मंत्री राजभाषा शील्ड
द्वितीय पुरस्कार रेल-मंत्री राजभाषा ट्राफी |
| 3.3 | ‘क’ एवं ‘ख’ क्षेत्र में स्थित आदर्श मंडलों के लिए | आचार्य महावीर प्रसाद चल वैजयंती |
| 3.4 | ‘ग’ क्षेत्र में स्थित आदर्श मंडल के लिए | आचार्य रघुवीर चल वैजयंती 1 |
| 3.5 | ‘क’ एवं ‘ख’ क्षेत्र में स्थित स्टेशन/
कार्यालय/वर्कशाप के लिए | रेल मंत्री रा.भा. शील्ड + 7000 रु नकद |
| 3.6 | ‘ग’ क्षेत्र में स्थित स्टेशन/कार्यालय/
वर्कशाप के लिए | रेल मंत्री रा.भा. शील्ड + 7000 रु नकद |
| 3.7 | ‘क’ एवं ‘ख’ क्षेत्र में स्थित
उत्पादन कारखानों के लिए | प्रथम पुरस्कार- रेल मंत्री रा.भा. शील्ड
द्वितीय पुरस्कार- शिव सागर मिश्र चल वैजयंती |
| 3.8 | ‘ग’ क्षेत्र में स्थित उत्पादन
कारखानों के लिए | प्रथम पुरस्कार- रेल मंत्री रा.भा. शील्ड
द्वितीय पुरस्कार रेल-मंत्री राजभाषा ट्राफी |

हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग संबंधी पुरस्कार

जो विभाग हिन्दी का सर्वाधिक प्रयोग अपने काम काज करते हैं उनके लिए निम्न पुरस्कारों को दिए जाने का प्रावधान है।

क्र.सं.	पुरस्कार का विवरण	पुरस्कार सं.
(क)	हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने वाले विभागों के लिए : प्रथम पुरस्कार - 9,000 रु. मुख्यालय में हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने वाले विभाग के कुल 6 कर्मचारियों को 1,500 रु प्रति कर्मचारी की दर से	1
	द्वितीय पुरस्कार - 6,000 रु. संबंधित रेलवे के मंडलों में से हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने वाली शाखा के कुल 5 कर्मचारियों को 1,200 रु प्रति कर्मचारी की दर से	1
	तृतीय पुरस्कार 4,000 रु. : संबंधित रेलवे के कारखानों (वर्कशाप) में राजभाषा हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने वाले कारखाने (वर्कशाप) के कुल 5 कर्मचारियों को 800 रु प्रति कर्मचारी की दर से	1
(ख)	हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने वाले रेलवे बोर्ड के निदेशालय के लिए : प्रथम पुरस्कार – आचार्य किशोरी दास चल वैजयंती + 9,000 रु. नकद	1
	द्वितीय पुरस्कार - रेल मंत्री रा.भा. शील्ड + 6,000 नकद	1
	तृतीय पुरस्कार – रेल मंत्री रा.भा. ट्रॉफी + 4,000 रु. नकद	1

रेलवे बोर्ड द्वारा प्रकाशित रेल राजभाषा पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ रचनाओं को पुरस्कृत करने की पुरस्कार योजना

पुरस्कार राशि	पुरस्कारों की सं.
सर्वश्रेष्ठ लेख – 1,000 रु.	1
सर्वश्रेष्ठ कहानी – 700 रु.	1
सर्वश्रेष्ठ कविता गजल – 500 रु.	1

रेलों में प्रकाशित हिंदी की गृह पत्रिकाओं में रचनाएं लिखने पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाते हैं:

लेख/निबंध/लघु कथा/कहानी/नाटक/समीक्षा – रु. 500/-

2. कविता – रु. 200/-

3. कार्टून/चित्र – रु. 150/-

—प्रस्तुति — भारत भूषण पाण्डेय

स्वच्छता

स्वच्छता विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचाव के सरलतम उपायों में से एक प्रमुख उपाय है। यह सुखी जीवन की आधारशिला है। स्वच्छता के द्वारा मनुष्य की सात्विक वृत्ति को बढ़ावा मिलता है।

साफ-सुथरा रहना मनुष्य का प्राकृतिक गुण है। वह अपने घर और आस-पास के क्षेत्र को साफ रखना चाहता है। वह अपने कार्यस्थल पर गंदगी नहीं फैलने देता। सफाई के द्वारा वह साँपों, बिच्छुओं, मक्खियों, मच्छरों तथा अन्य हानिकारक कीड़ों-मकोड़ों को अपने से दूर रखता है। सफाई बरतकर वह अपने चित्त की प्रसन्नता प्राप्त करता है। सफाई उसे रोगों के कीटाणुओं से बचाकर रखती है। इसके माध्यम से वह अपने आस-पड़ोस के पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रखता है।

स्वच्छता एक क्रिया है जिससे हमारा शरीर, दिमाग, कपड़े, घर, आसपास और कार्यक्षेत्र साफ और शुद्ध रहते हैं। हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिये साफ-सफाई बेहद जरूरी है। अपने आसपास के क्षेत्रों और पर्यावरण की सफाई सामाजिक और बौद्धिक स्वास्थ्य के लिये बहुत जरूरी है। हमें साफ-सफाई को अपनी आदत में लाना चाहिये और गंदगी को हमेशा के लिये हर जगह से हटा देना चाहिये क्योंकि गंदगी वह जड़ है जो कई बीमारियों को जन्म देती है जो रोज नहीं नहाता, गंदे कपड़े पहनता हो, अपने घर या आसपास को वातावरण को गंदा रखता है तो वो हमेशा बीमार रहता है।

गंदगी से आसपास के क्षेत्रों में कई तरह के कीटाणु, बैक्टेरिया वाइरस तथा फंगस आदि पैदा होते हैं जो बीमारियों को जन्म देते हैं। जिन लोगों की गंदी आदतें होती हैं वो भी खतरनाक और जानलेवा बीमारियों को फैलाते हैं। संक्रमित रोग बड़े क्षेत्रों में फैलाते हैं और लोगों को बीमार करते हैं कई बार तो इससे मौत भी हो जाती है। इसलिये, हमें नियमित तौर पर अपने स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिये। अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिये हमें बिल्कुल साफ-सुथरे कपड़े पहनने चाहिये। स्वच्छता से हमारा आत्म-विश्वास बढ़ता है और दूसरों का भी हम पर भरोसा बनता है। ये एक अच्छी आदत है जो हमें हमेशा खुश रखेगी। ये हमें समाज में बहुत गौरान्वित महसूस कराएगी।

हमारे स्वस्थ जीवन शैली और जीवन के स्तर को बनाए रखने के लिये स्वच्छता बहुत जरूरी है। ये व्यक्ति को प्रसिद्ध बनाने में अहम रोल निभाती है हमें बचपन से स्वच्छता की आदत को अपनाना चाहिये और पूरे जीवन भर उनका पालन करना चाहिये। एक व्यक्ति अच्छी आदत के साथ अपने बुरे विचारों और इच्छाओं को खत्म कर सकता है।

कुछ लोग अपने स्वभाव के विपरीत सफाई को कम महत्त्व देते हैं। वे गंदे स्थानों में रहते हैं। उनके घर के निकट कूड़ा-कचरा फैला रहता है। घर के निकट की नालियों में गंदा जल तथा अन्य वस्तुएँ सड़ती रहती हैं। निवास-स्थान पर चारों तरफ से बदबू आती है। वहाँ से होकर गुजरना भी दूभर होता है। वहाँ धरती पर ही नरक का दृश्य दिखाई देने लगता है। ऐसे स्थानों पर अन्य प्रकार की बुराइयों के भी दर्शन होते हैं। वहाँ के लोग संक्रामक बीमारियों से शीघ्र ग्रसित हो जाते हैं। गंदगी से थल, जल और वायु की शुद्धता पर विपरीत असर पड़ता है।

स्वच्छता का संबंध खान-पान और वेश-भूषा से भी है। रसोई की वस्तुओं तथा खाने-पीने की वस्तुओं में स्वच्छता का ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है। बाजार से लाए गए अनाज, फल और सब्जियों को अच्छी तरह धोकर प्रयोग में लाना चाहिए। पीने के पानी को साफ बरतन में तथा ढककर रखना चाहिए। कपड़ों की सफाई का भी पूरा महत्व है। स्वच्छ कपड़े कीटाणु से रहित होते हैं जबकि गंदे कपड़े बीमारी और दुर्गंध फैलाते हैं।

लोगों को शरीर की स्वच्छता का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए। प्रतिदिन स्नान करना अच्छी आदत है। स्नान करते समय शरीर को रगड़ना चाहिए ताकि रोमकूप खुले रहें। सप्ताह में दो दिन साबुन लगाकर नहाने से शरीर के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। सप्ताह में एक दिन नाखूनों को काट लेने से इनमें छिपी गंदगी नष्ट हो जाती है। भोजन में सब्जियों और फलों की भरपूर मात्रा लेने से शरीर की भीतरी सफाई हो जाती है। दूसरी तरफ अधिक मैदे वाला बासी और बाजारू आहार लेने से शरीर की शुद्धि में बाधा आती है।

घर की सफाई में घर के सदस्यों की भूमिका होती है तो बाहर की सफाई में समाज की। बहुत से लोग घर की गंदगी निकाल कर घर के सामने डाल देते हैं। इससे गंदगी पुनः घर में चली जाती है। घर के आस-पास का पर्यावरण दूषित होता है तो घर के लोग भी अछूते नहीं रह पाते। इसलिए समाज के सभी सदस्यों को आस-पड़ोस की सफाई में योगदान देना चाहिए। नदियों, तालाबों, झीलों, झरने के जल में किसी भी प्रकार की गंदगी का बहाव नहीं करना चाहिए। वायु में प्रदूषित तत्वों को मिलाने की प्रक्रिया पर लगाम लगानी चाहिए। अधिक मात्रा में पेड़ लगाकर वायु को शुद्ध रखना चाहिए।

आत्मिक उन्नति के लिए निवास-स्थान के वातावरण का स्वच्छ होना अत्यावश्यक है। गाँधी जी स्वच्छता पर बहुत जोर देते थे। परंतु आधुनिक सभ्यता और हानिकारक उद्योगों के फैलाव के कारण पूरी दुनिया में प्रदूषण का संकट खड़ा हो गया है। अतः स्वच्छता में बाधक तत्वों को पहचान कर उनके प्रसार पर रोक लगानी चाहिए। स्वच्छता हर एक की पहली और प्राथमिक जिम्मेदारी होनी चाहिये। सभी को ये समझना चाहिये कि खाने और पानी की तरह ही स्वच्छता भी बेहद आवश्यक है। बल्कि, हमें स्वच्छता को खाने और पानी से ज्यादा प्राथमिकता देनी चाहिये।

हम केवल तभी स्वस्थ रह सकते हैं जब हम सब कुछ बहुत सफाई और स्वास्थ्यकर तरीके से लें। बचपन सभी के जीवन का सबसे अच्छा समय होता है जिसके दौरान स्वच्छता की आदत में कुशल हो सकते हैं। स्कूल और कॉलेजों में स्वच्छता के विभिन्न प्रकारों के विषय पर विद्यार्थियों को बहुत सारे होमवर्क दिये जाते हैं। आज के दिनों में ये बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि एक बहुत बड़ी जनसंख्या स्वच्छता के अभाव में बीमारी की वजह से रोज मर रही है। इसलिए, हमें जीवन में स्वच्छता के महत्व और जरूरत के बारे में जागरूक होना बेहद आवश्यक है। हजारों जीवन को बचाने और उन्हें स्वस्थ जीवन देने के लिये हम सभी को मिलकर स्वच्छता की ओर कदम बढ़ाने की जरूरत है।

घर या अपने आसपास में संक्रमण फैलने से बचाने और गंदगी के पूर्ण निपटान के लिये हमें ध्यान रखना चाहिये कि गंदगी को केवल कूड़ेदान में ही डालें। साफ-सफाई केवल एक व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि ये घर, समाज, समुदाय, और देश के हर नागरिक की जिम्मेदारी है। हमें इसके महत्व और फायदों को समझना चाहिये। हमें भारत को स्वच्छ रखने की कसम खानी चाहिये कि न तो हम खुद से गंदगी करेंगे और किसी को करने देंगे। स्वच्छता हमें मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और बौद्धिक हर तरीके से स्वस्थ बनाता है। सामान्यतः, हमने हमेशा अपने घर में ये ध्यान दिया है कि हमारी दादी और माँ पूजा से पहले स्वच्छता को लेकर बहुत सख्त होती है, ये कोई अलग बात नहीं है, वो बस साफ-सफाई को हमारी आदत बनाना चाहती है।

— इन्द्र ज्योति राय

कुछ जानना है तो खोलिए गुगल

यदि हमें कुछ भी जानना हो और हमारे पास इंटरनेट की सुविधा हो तो जो बात सबसे पहले दिमाग में आती है वह है गुगल। वास्तव में, गुगल ही वह व्यवस्था है जिसके अंतर्गत दुनिया की तमाम जानकारी खोजने पर सर्च करने पर मिनटों के भीतर या यूं कहें कि सेकंडों के भीतर हमें उपलब्ध हो जाती है। इतना ही नहीं राह चलते हमें अपनी मंजिल का पता खोजने में भी गुगल का बहुत बड़ा हाथ है। अब किसी से पता पूछने के लिए किसी व्यक्ति की आवश्यकता नहीं है वरन गुगल हमारी मंजिल का पता बता देगा। यदि हम वास्तव में गुगल का सही उपयोग करना जानते हैं तो जीवन के रास्तों में बहुत सारी सुविधाएं हमें तत्काल हासिल हो जाती हैं। गुगल के आने के पूर्व तक संसार में सूचना क्रांति की शुरुआत हो चुकी थी परंतु ज्ञान का आदान-प्रदान होना खूब सहज नहीं था। लेकिन गुगल ने वह कर दिखाया है जिससे विषय चाहे जो भी हो हम उस पर अपने काम की चीज अवश्य ही खोज सकते हैं आइए देखते हैं की आखिर गुगल इस तरह की सुविधाएं हमें कैसे उपलब्ध कराता है -

गूगल एक अमेरिकी बहुराष्ट्रीय सार्वजनिक कम्पनी है, जो विज्ञापनों के द्वारा अपनी आय करती है। गुगल ने इंटरनेट सर्च, क्लाउड कम्प्यूटिंग और विज्ञापन तंत्र में पूंजी लगायी है। यह इंटरनेट के द्वारा कई उपयोगी सेवाएँ उपलब्ध कराता है तथा विकसित करता है। यह कम्पनी लैरी पेज और सर्गेई ब्रिन द्वारा स्थापित की गयी थी। इन्हें प्रायः "गूगल गाइस के नाम से सम्बोधित किया जाता है। 1998 में इसे एक कंपनी के रूप में शुरू किया गया जिसने अपना कार्य 2004 को प्रारम्भ किया। कम्पनी का शुरुआत से ही विश्व में ज्ञान को व्यवस्थित करने, सर्वत्र उपलब्ध कराने और उसे लाभदायी बनाने के अपने मिशन पर काम कर रही है। "डोन्ट बी इवल (बुरा न बनें)" इसका अपना नारा है। सन् 2006 से कम्पनी का मुख्यालय माउंटेन व्यू कैलिफोर्निया में है।

गूगल विश्वभर में फैले अपने डाटा-केन्द्रों से दस लाख से ज़्यादा सर्वर चलाता है और दस अरब से ज़्यादा खोज-अनुरोध तथा चौबीस पेटाबाइट उपभोक्ता-सम्बन्धी जानकारी (डाटा) संसाधित करता है। गूगल डेस्कटॉप कम्प्यूटरों के लिए भी साफ्टवेय तैयार करती है। कम्पनी की मूलभूत सेवा वेब-सर्च-इंजन के अलावा, गूगल ने कई नये उत्पादों का उत्पादन, अधिग्रहण और भागीदारी की है।

कम्पनी के ऑनलाइन उत्पादक जैसे जीमेल ईमेल सेवा और सामाजिक नेटवर्क साधन, ऑर्कुट और हाल ही का, गूगल बज़ एवं गुगल डाक्स डाटा संरक्षण के साथ साथ संसाधन की सुविधा भी प्रदान करते हैं। एलेक्सा गुगल.com को इंटरनेट की सबसे ज़्यादा दर्शित वेबसाइट है। इसके अलावा गूगल की अन्य वेबसाइटें (गुगल.co.in, गुगल.co.uk, आदि) शीर्ष की सौ वेबसाइटों में आती हैं। यही स्थिति गूगल की साइट यूट्यूब और ब्लॉगर की है। बाज़ार में गूगल की सेवाओं का प्रमुखता बढ़ने से गूगल की आलोचना एवं इसके साथ कई समस्याएं व्यक्तिगतता, कॉपीराइट और सेंसरशिप की वजह से हुई हैं।

गूगल सर्च एक वेब खोज इंजन है और यह कम्पनी की सबसे लोकप्रिय सेवा है। गूगल अरबों वेब पृष्ठों को अनुक्रमित करता है, ताकि उपयोगकर्ता, खोजशब्दों और प्रचालकों (ऑपरेटरों) के प्रयोग के माध्यम से सही जानकारी की खोज कर सके। इसकी लोकप्रियता के बावजूद, गूगल सर्च को कई संगठनों से आलोचना मिली है। इसके बाद कंपनी ने उन शब्दों की एक ऐसी सूची तैयार की है जिनमें इस दिग्गज कम्पनी की नयी त्वरित खोज सुविधा खोज नहीं करेगी।

आलोचना के बावजूद, बुनियादी खोज इंजन विशिष्ट सेवाओं, जैसे कि इमेज अर्थात् छवि खोज इंजन, गूगल समाचार खोज साइट, गूगल नक्शा और अन्य सहित फैल गया है। 2006 की शुरुआत में कम्पनी ने गूगल वीडियो का शुभारम्भ किया, जिसका प्रयोग उपयोगकर्ता इंटरनेट पर वीडियो अपलोड, खोज और देखने के लिए कर सकते हैं। अपने मानक वेब खोज सेवाओं के अलावा, गूगल ने पिछले कुछ वर्षों में कई ऑनलाइन उत्पादकता उपकरण जारी किये हैं। जीमेल, गूगल द्वारा एक मुक्त वेबमेल सेवा है, जो उस वक्त निमंत्रण-आधारित बीटा कार्यक्रम के रूप में 2004 को शुरू किया गया और 2007 को आम जनता के लिए उपलब्ध कर दिया गया। इस सेवा को बीटा स्थिति से 2009 को उन्नत किया गया, उस समय इस सेवा के 146 मिलियन मासिक प्रयोक्ता थे।

यह ऑनलाइन ई-मेल कोई पहली ऐसी सेवा होगी जो एक गीगाबाइट भण्डारण के लिए प्रदान करेगी तथा किसी इंटरनेट फोरम की तरह एक ही वार्तालाप के लिए भेजे गये ई-मेलों को एक सूत्र में रखने वाली पहली सेवा होगी। गूगल का दावा है कि जीमेल को या उससे भेजा जाने वाला मेल कभी भी खाता धारक के अलावा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा नहीं पढ़ा जाता और उनका प्रयोग केवल विज्ञापनों की प्रासंगिकता में सुधार लाने के लिए किया जाता है।

गूगल डॉक्स गूगल की उत्पादकता समूह का एक उत्पाद है, जो उपयोगकर्ताओं को माइक्रोसॉफ्ट वर्ड जैसा जैसी सुविधा प्रदान करता है। यह एक ऑनलाइन शब्द संसाधक है जो बोलकर टाइपिंग की सुविधा के लिए प्रसिद्ध है। इसमें वर्ड जैसा ही परिवेश है तथा शब्दों की टाइपिंग एवं फॉर्मेटिंग करने के लिए व्यवस्थाएं बनी हुई हैं। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि आप इसमें जो कुछ भी टाइप करेंगे वह सारा मैटर क्लाउड में सेव हो जाएगा। अलग से इसे आपको रखने की, सेव करने की आवश्यकता नहीं होगी। इसकी दूसरी जो सबसे बड़ी खासियत है वह यह कि यदि आप चाहें तो अमेरिका में बैठकर भारत में किसी को डिक्टेशन दे सकते हैं। इतना ही नहीं आप इस फाइल को स्वयं भी एडिट कर सकते हैं। किंतु इसके लिए आवश्यक है कि आपका जीमेल में कोई ईमेल अकाउंट हो आप तभी गुगल डॉक्स का उपयोग कर पाएंगे। आप यह कार्य अपने स्मार्टफोन के द्वारा भी कर सकते हैं। गूगल डॉक्स एप डाउनलोड करने के बाद आप उसे खोलकर प्रयोग कर सकते हैं।

गूगल अनुवाद या गूगल ट्रांसलेट एक अनुवादक साफ्टवेयर एवं सेवा है जो एक भाषा के टेक्स्ट या वेबपेज को दूसरी भाषा में अनुवाद करता है। यह गूगल नामक कंपनी द्वारा विकसित एवं परिचालित है। इसके लिये गूगल अपना स्वयं का अनुवादक साफ्टवेयर प्रयोग करता है जो मशीनी अनुवाद है। जनवरी 2016 की स्थिति के अनुसार, गूगल अनुवाद विभिन्न स्तरों पर 90 भाषाओं का समर्थन करता है और प्रतिदिन 20 करोड़ लोगों को अनुवाद प्रदान करता है। गूगल ट्रांसलेट में आप 80 भाषाओं में अपने अनुवाद पा सकते हैं।

गूगल यह सुविधा प्रदान करता है जिसके द्वारा आप एक भाषा में टेक्स्ट लिखकर उसका अनुवाद तत्काल दूसरी भाषा में प्राप्त कर सकें। उदाहरण के लिए यदि हमें कुछ हिंदी में लिखना हो और हम उसका अनुवाद तमिल में चाहते हो तो गुगल ट्रांसलेशन के द्वारा हम इसे तत्काल पा सकते हैं। यह साधारण वाक्यों के लिए यह बहुत सही रूप से कार्य करता है परंतु कंप्लेक्स वाक्यों के लिए थोड़ी बहुत असुविधाएं भी होती हैं तथापि यह एक बेहतर सेवा है जिससे हम अपने कार्य को गति प्रदान कर सकते हैं। ठीक इसी तरह गूगल ट्रांसलिटरेशन भी है जिसके द्वारा हम एक लिपि से दूसरी लिपि में लिप्यंतरण कर सकते हैं। इसके लिए हमें पूर्व की भांति ही एक लिपि के शब्द, वाक्य निर्धारित स्थल पर लिखने होते हैं और कमांड देने से वह तत्काल दूसरी भाषा की लिपि में हमें मिल जाते हैं। ज्ञान के बिना मनुष्य सुखी नहीं हो सकता है और गुगल इस कार्य को भलीभांति निभाने में निरंतर प्रतिबद्ध है। इस प्रकार यदि कहा जाए तो गूगल ने मानवता के विकास के लिए बहुत बड़ा कार्य किया है जिससे हम दूसरों का ज्ञान हासिल कर अपने ज्ञान का विस्तार कर सकते हैं या अपने ज्ञान को दूसरों तक पहुंचाकर दूसरों के साथ साथ हम स्वयं भी अपने को सुखी महसूस कर सकते हैं।

उपनयन संस्कार

'उपनयन' का अर्थ है — पास या सन्निकट ले जाना। किन्तु किसके पास ले जाना ? सम्भवतः आरम्भ में इसका तात्पर्य था आचार्य के पास (शिक्षण के लिए) ले जाना। हो सकता है। नवागत शिष्यों को विद्यार्थी बनने की अवस्था तक पहुँचा देना। गुरु बच्चे से यह कहलवाता है "मैं ब्रह्मसूत्रों को प्राप्त हो गया हूँ। मुझे इसके पास ले चलिए। सविता देवता द्वारा प्रेरित मुझे ब्रह्मचारी होने दीजिए।" मानवग्रन्थसूत्र एवं काठक, ने 'उपनयन' के स्थान पर 'उपायन' शब्द का प्रयोग किया है। काठक के टीकाकार आदित्यदर्शन ने कहा है कि उपानय, उपनयन, मौञ्जीबन्धन, बटुकरण, व्रतबन्ध समानार्थक हैं।

हिन्दू धर्म संस्कारों में उपनयन संस्कार दशम संस्कार है। मनुष्य जीवन के लिए यह संस्कार विशेष महत्वपूर्ण है। इस संस्कार के अनन्तर ही बालक के जीवन में भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। इस संस्कार में वेदारम्भ-संस्कार का भी समावेश है। इसी को यज्ञोपवीत-संस्कार भी कहते हैं। इस संस्कार में बटुक को गायत्री मंत्र की दीक्षा दी जाती है और यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है। विशेषकर अपनी-अपनी शाखा के अनुसार वेदाध्ययन किया जाता है। यह संस्कार ब्राह्मण बालक का आठवें वर्ष में, क्षत्रिय बालक का ग्यारहवें वर्ष में और वैश्य बालक का बारहवें वर्ष में होता है। कन्याओं को इस संस्कार का अधिकार नहीं दिया गया है। केवल विवाह-संस्कार ही उनके लिये द्विजत्व के रूप में परिणत करनेवाला संस्कार माना गया है।

यह संस्कार सब संस्कारों में अति महत्वपूर्ण माना गया है। ऋग्वेद में 'ब्रह्मचारी' शब्द आया है। 'उपनयन' शब्द दो प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है। 1. बच्चे को आचार्य के सन्निकट ले जाना, 2. वह संस्कार या कृत्य जिसके द्वारा बालक आचार्य के पास ले जाया जाता है। पहला अर्थ आरम्भिक है, किन्तु कालान्तर में जब विस्तारपूर्वक यह कृत्य किया जाने लगा तो दूसरा अर्थ भी प्रयुक्त हो गया। आपस्तम्बधर्मसूत्र ने दूसरा अर्थ लिया है। उसके अनुसार उपनयन एक संस्कार है जो उसके लिए किया जाता है, जो विद्या सीखना चाहता है; "यह ऐसा संस्कार है जो विद्या सीखने वाले को गायत्री मन्त्र सिखाकर किया जाता है।" स्पष्ट है, उपनयन प्रमुखतया गायत्री-उपदेश है। आश्वलायनगृह्यसूत्र के मत से ब्राह्मण कुमार का उपनयन गर्भाधान या जन्म से लेकर आठवें वर्ष में, क्षत्रिय का 11 वें वर्ष में एवं वैश्य का 12वें वर्ष में होना चाहिए; यही नहीं, क्रम से 16वें, 22वें एवं 24वें वर्ष तक भी उपनयन का समय बना रहता है। शांखायनगृह्यसूत्र ने गर्भाधान से 8वाँ या 10वाँ वर्ष, मानव ने 7वाँ या 9वाँ वर्ष, काठक ने तीनों वर्णों के लिए क्रम से 7वाँ, 9वाँ एवं 11वाँ वर्ष स्वीकृत किया है। ब्रह्मचारी दो वस्त्र धारण करता था, जिनमें एक अधोभाग के लिए (वासस्) और दूसरा ऊपरी भाग के लिए (उत्तरीय)।

⇒ आपस्तम्बधर्मसूत्र के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य ब्रह्मचारी के लिए वस्त्र क्रम से पटुआ के सूत का, सन् के सूत का एवं मृगचर्म का होता था।

⇒ कुछ धर्मशास्त्रकारों के मत से अधोभाग का वस्त्र रूई के सूत का (ब्राह्मणों के लिए लाल रंग, क्षत्रियों के लिए मजीठ रंग एवं वैश्यों के लिए हल्दी रंग) होना चाहिए वस्त्र के विषय में बहुत मतभेद हैं।

⇒ आपस्तम्बधर्मसूत्र ने सभी वर्णों के लिए भेड़ का चर्म (उत्तरीय के लिए) या कम्बल विकल्प रूप से स्वीकार कर लिया है।

इस प्रकार उपनयन या यज्ञोपवीत संस्कार भारतीय समाज व इसकी संस्कृति में रच बस गया है और आज सिर्फ ब्राह्मण ही नहीं अपितु अन्य जातियां भी इस संस्कार को अपना रहीं हैं क्योंकि यह संस्कार मन की शुद्धता और चित्त की प्रखरता से जुड़ा है। इस संस्कार के संपन्न होने के बाद बालक को अभूतपूर्व तेज का अनुभव होता है और वह नई उर्जा के साथ अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ता है।

तुलसी विवाह

देवोत्थान एकादशी के दिन मनाया जाने वाला तुलसी विवाह विशुद्ध मांगलिक और आध्यात्मिक प्रसंग है। देवता जब जागते हैं, तो सबसे पहली प्रार्थना हरिवल्लभा तुलसी की ही सुनते हैं। इसीलिए तुलसी विवाह को देव जागरण के पवित्र मुहूर्त के स्वागत का आयोजन माना जाता है। तुलसी विवाह का सीधा अर्थ है, तुलसी के माध्यम से भगवान का



आवाहनाकार्तिक, शुक्ल पक्ष, एकादशी को तुलसी पूजन का उत्सव मनाया जाता है। वैसे तो तुलसी विवाह के लिए कार्तिक, शुक्ल पक्ष, नवमी की तिथि ठीक है, परन्तु कुछ लोग एकादशी से पूर्णिमा तक तुलसी पूजन कर पाँचवें दिन तुलसी विवाह करते हैं। आयोजन बिल्कुल वैसा ही होता है, जैसे हिन्दू रीति-रिवाज से सामान्य वर-वधु का विवाह किया जाता है। मंडप, वर पूजा, कन्यादान, हवन और फिर प्रीतिभोज, सब कुछ पारम्परिक रीति-रिवाजों के साथ निभाया जाता है। इस

विवाह में शालिग्राम वर और तुलसी कन्या की भूमिका में होती है।

यह सारा आयोजन यजमान सपत्नीक मिलकर करते हैं। इस दिन तुलसी के पौधे को यानी लड़की को लाल चुनरी-ओढ़नी ओढ़ाई जाती है। तुलसी विवाह में सोलह शृंगार के सभी सामान चढ़ावे के लिए रखे जाते हैं। शालिग्राम को दोनों हाथों में लेकर यजमान लड़के के रूप में यानी भगवान विष्णु के रूप में और यजमान की पत्नी तुलसी के पौधे को दोनों हाथों में लेकर अग्नि के फेरे लेते हैं। विवाह के पश्चात प्रीतिभोज का आयोजन किया जाता है। कार्तिक मास में स्नान करने वाले स्त्रियाँ भी कार्तिक शुक्ल एकादशी को शालिग्राम और तुलसी का विवाह रचाती हैं। समस्त विधि विधान पूर्वक गाजे बाजे के साथ एक सुन्दर मण्डप के नीचे यह कार्य सम्पन्न होता है विवाह के स्त्रियाँ गीत तथा भजन गाती हैं।

प्राचीन काल में जालंधर नामक राक्षस ने चारों तरफ़ बड़ा उत्पात मचा रखा था। वह बड़ा वीर तथा पराक्रमी था। उसकी वीरता का रहस्य था, उसकी पत्नी वृन्दा का पतिव्रता धर्म। उसी के प्रभाव से वह सर्वजंयी बना हुआ था। जालंधर के उपद्रवों से परेशान देवगण भगवान विष्णु के पास गये तथा रक्षा की गुहार लगाई। उनकी प्रार्थना सुनकर भगवान विष्णु ने वृन्दा का पतिव्रता धर्म भंग करने का निश्चय किया। उधर, उसका पति जालंधर, जो देवताओं से युद्ध कर रहा था, वृन्दा का सतीत्व नष्ट होते ही मारा गया। जब वृन्दा को इस बात का पता लगा तो क्रोधित होकर उसने भगवान विष्णु को शाप दे दिया, 'जिस प्रकार तुमने छल से मुझे पति वियोग दिया है, उसी प्रकार तुम भी अपनी स्त्री का छलपूर्वक हरण होने पर स्त्री वियोग सहने के लिए मृत्यु लोक में जन्म लोगे।' यह कहकर वृन्दा अपने पति के साथ सती हो गई। जिस जगह वह सती हुई वहाँ तुलसी का पौधा उत्पन्न हुआ। एक अन्य प्रसंग के अनुसार वृन्दा ने विष्णु जी को यह शाप दिया था कि तुमने मेरा सतीत्व भंग किया है। अतः तुम पत्थर के बनोगे। विष्णु बोले, 'हे वृन्दा! यह तुम्हारे सतीत्व का ही फल है कि तुम तुलसी बनकर मेरे साथ ही रहोगी। जो मनुष्य तुम्हारे साथ मेरा विवाह करेगा, वह परम धाम को प्राप्त होगा।' बिना तुलसी दल के शालिग्राम या विष्णु जी की पूजा अधूरी मानी जाती है। शालिग्राम और तुलसी का विवाह भगवान विष्णु और महालक्ष्मी के विवाह का प्रतीकात्मक विवाह है।

—पूजा कुमारी

स्वास्थ्य व्यवस्था

आखिर कब तक सरकारी अस्पताल में
मुफ्त के नाम पर
ढोंग चलता रहेगा।
सिर्फ दिखावे के लिए ही
पुर्जा कटता रहेगा!
डाक्टर साहब, दो तीन दवाइयां लिखकर
बैठ जाते हैं चैन से
न जाने क्यूँ किसी भी बीमारी में
वही दवाई खिला देते हैं फ़ौरन से!
हमेशा की तरह, हर बार
छली तो नारी ही जाती है।
मुफ्त दवाइयों और स्वास्थ्य लाभ के चक्कर में
दर – दर ठोकरे खाती हैं !

न जाने कब तक ऐसा चलता रहेगा
सरकारी के नाम पर अस्पताल ठगता रहेगा!
घंटों काउंटर पर खड़ी रहती है यह नारी
ये है इनकी मजबूरी और लाचारी!
सुविधा है, स्वच्छता है
मिलती है सिर्फ जानकारी।
वास्तव में, न दवा है, न है कोई तैयारी !
डाक्टर तो बन बैठे हैं भक्षक।
इन्हें कोई कैसे कहे जीवन रक्षक!
नहीं होता इनसे कोई बीमारी ठीक
लगता है कोई मांग रहा इनसे भीख!

कर देते हैं ये फ़ौरन रेफर।
प्राइवेट अस्पतालों को करते हैं ज्यादा प्रेफर !
मिलती है इन्हें मोटी रकम।
कर जाते हैं जिन्हें ये आराम से हजम!
न जाने कब तक सुविधा के नाम पर
गला घोंटा जाता रहेगा।
अपने ही अधिकार के लिए

घूस खिलाना पड़ेगा
अब हमें आगे बढ़ना होगा
अपने अधिकारों के लिए लड़ना होगा!
समझने लगी है अब नारी
स्वास्थ्य लाभ की महत्ता
इसलिए तो हर कोई अब
नारी- नारी ही कहता!

बदलेंगे हम इस त्रस्त व्यवस्था को
ऐसा हमने ठान लिया
क्योंकि महिलाओं ने
अपने अधिकार को जान लिया!

—- प्रकाश रंजन



मालदा मंडल के मुंगेर स्थित विश्व के पहले योग विश्वविद्यालय व राजमहल स्थित कन्हैया स्थान के कुछ दृश्य



बिहार योग विद्यालय योग से सम्बन्धित शिक्षण-प्रशिक्षण का अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विश्वविद्यालय है। यह बिहार के मुंगेर नगर में गंगा नदी के किनारे स्थित है। यह विद्यालय गंगा दर्शन के लिए प्रसिद्ध है। इसकी स्थापना सन् 1964 में स्वामी सत्यानन्द सरस्वती ने अपने गुरु स्वामी शिवानन्द की इच्छानुसार विश्व को योग की प्राचीन विद्या की शिक्षा देने के लिए की थी। बिहार योग विद्यालय योग प्रशिक्षण प्रदान करने वाली एक दातव्य एवं शैक्षणिक संस्था है। आज यह विश्व का प्रथम योग विश्वविद्यालय है जहां पूरे विश्व से लोग योग और अध्यात्म की खोज में आते हैं। ऐसा माना जाता है कि यहां के कई योगियों ने आत्म ज्ञान को प्राप्त किया और अपना शेष जीवन मानवता के उद्धार के लिए समर्पित कर दिया साथ ही इस संस्थान में कार्य करते हुए अनंत लोक को प्रस्थान किए।

राजमहल से 13 कि० मी० पर अवस्थित कन्हैया स्थान भगवान कृष्ण के मंदिर के लिए विख्यात है। यह माना जाता है कि बंगाल से लौटते समय श्री चैतन्य महाप्रभु यहाँ रुके थे तथा यहीं उन्हें भगवान के दर्शन भी हुए थे। श्री चैतन्य भक्ति योग के परम प्रचारक एवं भक्तिकाल के प्रमुख कवियों में से एक थे चैतन्य महाप्रभु के तथा भगवान कृष्ण के पद चिह्न कन्हैया स्थान में मौजूद है। वर्तमान समय में कन्हैया स्थान में भगवान श्रीकृष्ण का मंदिर भी निर्मित हो गया है। गंगा नदी के किनारे स्थित इस मंदिर में हर साल देश-विदेश के हजारों श्रद्धालु भगवान श्रीकृष्ण के चरण चिह्नों के दर्शन को आते हैं तथा श्रद्धा भक्ति पूर्वक वहां अपना माथा टेकते हैं। आज की तारीख में यह मंदिर भगवान श्रीकृष्ण के भक्तों के लिए एक धाम की तरह माना जाता है और यह कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण यहां स्वयं उपस्थित हैं।



बसंत के आगमन के स्वागत में मालदा मंडल कार्यालय के उपवन में
प्रस्फुटित मनभावन फूलों के दृश्य

